AXIS INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH (AIJMR)
Peer review journal As per UGC 2025 Standard Guidelines

प्रेमचंद के नाटकों में सामाजिक चेतना

हेमलता चंद्राकर[1] , डॉ. मो. अज़हर खान [2]

1. शोधार्थी भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ. ग.)

2. शोध-निर्देशक , सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग), भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ. ग.)

शोध-सार

हिंदी साहित्य के युग प्रवर्तक लेखक मुंशी प्रेमचंद ने कथा साहित्य के साथ-साथ नाटक विधा में भी अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। यद्यपि उनका नाटक लेखन सीमित रहा, फिर भी उनके नाटकों में सामाजिक यथार्थ, नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं की गहरी अभिव्यक्ति मिलती है। 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' उनके ऐसे नाटक हैं जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक चेतना के वाहक भी हैं। इन नाटकों में प्रेमचंद ने भारतीय समाज की जटिलताओं, धार्मिक-सांस्कृतिक संघर्षों, स्त्री-पुरुष संबंधों तथा नैतिक द्वंद्वों को अत्यंत संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया है। 'संग्राम' में जहाँ वर्ग-संघर्ष और स्त्री सशक्तिकरण की झलक मिलती है, वहीं 'कर्बला' में धर्म और बलिदान की पराकाष्ठा है, जबकि 'प्रेम की वेदी' में प्रेम और सामाजिक रूढ़ियों के बीच टकराव को दर्शाया गया है। प्रेमचंद की रचनाशीलता हमारे अपने समय की रचनाशीलता से बनती हुई आज की तमाम रचनाशीलताओं के लिए नये-नये सवाल खड़े करती है।

बीज-शब्द: नाटक, नैतिकता, संघर्ष, रचनाशीलता, संवेदना, शोषण, उत्पीड़न, विघटन, किसान, मध्यवर्ग, गुलामी, सरोकार, स्त्री-चेतना, आत्मसम्मान।

लेख का इतिहास

प्राप्त: 27 अप्रैल 2026, स्वीकार किया गया: 20 मई 2026, प्रकाशित: 25 जून 2026

प्रशस्ति पत्र

चंद्राकर. एच., खान, ए., (2026)। **प्रेमचंद के नाटकों में सामाजिक निजी। एक्सिस इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (एआईजेएमआर),** 2(2), 23-26.

प्रस्तावना

प्रेमचंद के यहां साहित्य और जीवन दो अलग आयाम नहीं हैं। तत्कालीन समय के सभी बड़े परिप्रेक्ष्य, चाहे वह राष्ट्रीय आंदोलन हो या सामाजिक न्याय या मानवीय आचरण प्रेमचंद की रचनाशीलता में समाहित होते हैं। वह अपनी यथार्थ दृष्टि से चुने हुए पात्रों के क्रिया-व्यापार से ऐसी वस्तु-स्थितियां दिखलाते हैं जो उन्हें जीवन का कुशल रचनाकार सिद्ध करती हैं, जो उनसे पहले से ही विरल था। विशेषकर, जब हम प्रेमचंद के बाद की रचनाओं का विस्तार देखते हैं, जहां वह सामाजिक यथार्थ की भूमि से उपजी अपनी रचना को युग की व्यापक चिंताओं से जोड़ देते हैं।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य द्वारा तत्कालीन युग को वाणी दी, साहित्य को नई प्रेरणा दी। उनके नाटकों में देश की तत्कालिक सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने वर्ग चेतना के प्रकाश में समाज के पतन और विकासशील शक्तियों को पहचाना। एक जनवादी साहित्यकार की भांति उन्होंने जनभावना का प्रतिनिधित्व किया और

This is an Open Access article that uses a funding model which does not charge readers or their institutions for access and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0) and the Budapest Open Access Initiative(http://www.budapestopenaccessinitiative.org/read), which permit unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, providedoriginal work is properly credited.

शोषित और पीड़ित मानवता के दुःख-दर्द को वाणी प्रदान की। वास्तव में मानव पीड़ा की मूल समस्या ही प्रेमचंद के नाटक साहित्य में विविध रूप में छाई हुई है। उन्होंने अभिजातवर्गीय धीरोदात्त नायकों के स्थान पर समाज में पिछड़े हुए उपेक्षित सामान्य व्यक्ति को महत्वपूर्ण स्थान दिया। अपनी कल्पना द्वारा यथार्थ के आधार पर उनमें भावुकता के ऐसे रंग भर दिए हैं कि वे पाठकों के मर्म को छू गए।

समाज की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का जैसा विशद् चित्रण प्रेमचंद ने अपने नाटकों में किया है, वह अत्यंत दुर्लभ है। देश और समाज की ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका सोद्देश्य चित्रण प्रेमचंद के नाटक साहित्य में न हुआ हो। यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो आज भी हम बहुत सी समस्याओं में जकड़े हुए हैं। इस पर सुनीता त्यागी ने लिखा है- "प्रेमचंद के साहित्य रचना का उद्देश्य व्यक्ति जीवन में मानवीय आदर्शों की स्थापना करना रहा है, क्योंकि वे जानते थे कि इन उदात्त आदर्शों के अभाव में हम व्यक्ति को किसी भी उर्ध्वगामी उद्देश्य के लिए प्रेरित नहीं कर सकते। प्रत्येक लेखक का अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। रुचियों की भिन्नता के होते हुए भी साहित्य की बुनावट और बनावट पर ये बहुरूपी रुचियां अपना अलग-अलग मत प्रकट कर सकती हैं, पर मानव पीड़ा में एक ऐसा बिंदु है जिस पर सभी साहित्यकारों के एक ही मत होने की संभावना है। मनुष्य में जो कुछ सुंदर है, विशाल है, आदरणीय है, आनंदप्रद है, साहित्य उसी की मूर्ति है। उसकी गोद में उसे आश्रय मिलना चाहिए जो निराश्रय है, जो पतित है, अभावग्रस्त है।"1

प्रेमचंद साहित्य में सोद्देश्यता के सवाल को बेहद गंभीरता से उठाते हैं। उनके शुरुआती लेखन को किसी भी दृष्टि से पूर्णतया आदर्शवाद या सुधारवाद कहकर नकारा नहीं जा सकता। डॉ. रमा ने लिखा है- "साहित्य का मुख्य उद्देश्य सही मायनों में किसी भी व्यक्ति को मानवता का पाठ पढ़ाना है। जब हम किसी भी इंसान को मानव बनाने की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य होता है कि उस व्यक्ति में सभी मानवीय गुण उपलब्ध कराए जाएं जो मानवीयता के आधार हैं। साहित्य वो विवेक पैदा करता है जो इंसान को सही-गलत की पहचान करवाता है। कथनी व करनी में समानता स्थापित करने के साथ ही उसे बनाए रखने की प्रेरणा भी साहित्य देता है। किसी भी व्यक्ति में इन गुणों को उपलब्ध करवाने की क्षमता रखने वाला साहित्य ही उत्कृष्ट साहित्य की कोटि में आता है।"2 चूंकि प्रेमचंद बार-बार उस प्रश्न को उठाते हैं कि साहित्य अंततः करता क्या है? एक गुलाम या आजाद देश के साहित्य का स्वरूप क्या होना चाहिए? वहां का अनपढ़, मजदूर किसान अपने सरोकारों को साहित्य के सरोकारों से कैसे जोड़ सकता है?

मुंशी प्रेमचंद के नाटक उनके यथार्थवादी साहित्य की ही तरह सामाजिक चेतना और सुधारवादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण हैं। यद्यपि उन्होंने उपन्यास और कहानियों में अधिक लिखा, लेकिन उनके नाटकों में भी समाज के गहरे मुद्दों को उठाया गया है। प्रेमचंद ने अपने नाटकों में ग्रामीण जीवन, किसानों की दुर्दशा, स्त्री-विमर्श, जातिवाद और आर्थिक असमानता जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी है। उनके पात्र केवल मनोरंजन नहीं करते, बल्कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाते हैं। वे दर्शकों को सोचने और बदलाव लाने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रेमचंद का साहित्य केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम था। उनके लेखन में मानवीय संवेदना, न्याय की पुकार और समाज के वंचित वर्गों की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनाई देती है। मुंशी प्रेमचंद के नाटक संग्राम, कर्बला और प्रेम की वेदी उनके साहित्यिक सरोकारों और सामाजिक चेतना का सशक्त उदाहरण हैं। ये नाटक न केवल मनोरंजन करते हैं, बल्कि समाज के गहरे मुद्दों को उजागर करते हैं और सुधार की प्रेरणा देते हैं।

'संग्राम' नाटक में ग्रामीण जीवन, जमींदारी प्रथा, स्त्री की अस्मिता, जमींदार द्वारा किसान परिवार पर अत्याचार का चित्रण है। इसमें स्त्री प्रतिरोध और आत्मसम्मान की लड़ाई के साथ वर्ग संघर्ष और न्याय की पुकार का भी उल्लेख हुआ है। इस नाटक में प्रेमचंद ने गीतात्मक शैली का प्रयोग किया है, जो उनके अन्य नाटकों से अलग है। मूलतः यह नाटक सामंती व्यवस्था के शोषण पर आधारित है, जहाँ जमींदारी प्रथा का विरोध, स्त्री की आत्मनिर्भरता और प्रतिशोध की भावना, वर्ग संघर्ष और न्याय की मांग इत्यादि इस नाटक के मुद्दे हैं। इस नाटक के संवादों में किसानों की पीड़ा और सामंती अत्याचार की झलक मिलती है। राजेश्वरी के संवादों में स्त्री आत्मसम्मान और प्रतिरोध की भावना स्पष्ट है। जब वह अपने पति हलधर से कहती है कि- "मैं तुम्हारी दासी नहीं, एक किसान की पत्नी हूँ। मेरी इज़्ज़त तुम्हारे धन से नहीं खरीदी जा सकती।"3 इस नाटक में संवादों के माध्यम से प्रेमचंद ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई है। यह सामाजिक चेतना और सरोकार का सुन्दर उदहारण है

'संग्राम' नाटक एक किसान हलधर और उसकी पत्नी राजेश्वरी की कहानी है, जो सामंती अत्याचार का शिकार होते हैं। जमींदार ठाकुर मचल सिंह राजेश्वरी पर आसक्त होता है और षड्यंत्रपूर्वक हलधर को जेल भिजवा देता है। इस नाटक में सामाजिक चेतना के साथ किसान वर्ग की लाचारी और सामंती शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध की स्पष्ट भावना दिखाई देती है। नाटक में राजेश्वरी का संवाद स्त्री की आत्मनिर्भरता और साहस का प्रतीक है। प्रेमचंद ने इस नाटक में भावनात्मक तीव्रता और सामाजिक गहराई दोनों को पत्रों के माध्यम से प्रयुक्त किया है। यह नाटक वर्ग संघर्ष और स्त्री प्रतिरोध का सशक्त चित्रण है। हलधर एक गरीब किसान जो सामंती शोषण का शिकार है। उसका चरित्र ग्रामीण भारत की पीड़ा और संघर्ष का प्रतीक है। इसमें किसान वर्ग की दुर्दशा, न्याय की मांग, मौन प्रतिरोध और सहनशीलता को दर्शाया गया है। ठाकुर मचल सिंह सामंती अत्याचार का प्रतीक है, जो सत्ता और वासना के बल पर अन्याय करता है। इस नाटक का सामाजिक सरोकार और चेतना यह है कि इसमें सामंती व्यवस्था की आलोचना की गयी है। इस नाटक में प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और समस्याओं को उजागर किया है। इसके आलावा इस नाटक में सामाजिक परिवर्तन और जागृति की बात कही गई है। इसमें प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त जातिवाद और वर्गभेद की आलोचना भी की है।

'कर्बला' नाटक मुख्य रूप से धार्मिक शहादत और नैतिकता पर आधारित है। इसमें हुसैन की शहादत और धार्मिक संघर्ष को चित्रित किया गया है। इस नाटक में यजीद के द्वारा धर्म के नाम पर सत्ता का दुरुपयोग किया जाता है। इसमें प्रेमचंद ने नैतिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया है। हुसैन के बलिदान को प्रेमचंद ने सत्य की नैतिक विजय के रूप में दिखाया है। यह प्रेमचंद का ऐतिहासिक नाटक है, इसमें उन्होंने इस्लाम धर्म के महान आदर्शों को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया है। इस ऐतिहासिक नाटक में हजरत हुसैन की शहादत का वर्णन है, जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है। यह प्रेमचंद का सबसे सशक्त ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें धार्मिक आदर्शों को सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में हुसैन की शहादत और न्याय के लिए संघर्ष का चित्रण किया गया है। यज़ीद के अत्याचार के विरुद्ध हुसैन का यह संवाद बहुत महत्वपूर्ण है, वे कहते हैं- "सत्य की राह पर चलना मौत से डरना नहीं सिखाता।"4 इस नाटक के सामाजिक सरोकार और चेतना कि बात करें तो इसमें संवादों के ज़रिए प्रेमचंद ने धर्म को सत्ता से अलग करने की बात की है।

This is an Open Access article that uses a funding model which does not charge readers or their institutions for access and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0) and the Budapest Open Access Initiative(http://www.budapestopenaccessinitiative.org/read), which permit unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, providedoriginal work is properly credited.

प्रेमचंद धर्म को करुणा और न्याय से जोड़ते हैं। वे यथार्थ को ठोस रूप में सामने रखते हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में सामाजिक सुधार, जाति-उन्मूलन, धार्मिक चेतना और स्त्री अस्मिता जैसे विषयों को प्रमुखता दी। प्रेमचंद हिंदी में यथार्थ और सामाजिक न्याय के पक्षधर रहे। वे धार्मिक पाखंड, जातिवाद और रूढ़ियों का विरोध करते हैं। प्रेमचंद के नाटक दलितों, वंचितों और स्त्रियों की पीड़ा को सशक्त रूप में चित्रित करते हैं, जहाँ स्त्री केवल सहानुभूति की नहीं, आत्मबल और विवेक की प्रतीक बनकर सामने आती हैं। वे सामाजिक परिवर्तन और मानवीय चेतना के प्रेरक स्रोत हैं। रामविलास शर्मा ने ठीक लिखा है कि- "प्रेमचंद दुखी हिंदुस्तान के गरीबों के लेखक थे। उनका साहित्य तमाम पीड़ितों का मानसिक संबल है।"5 यह प्रेमचंद के सन्दर्भ में विल्कुल सटीक टिपण्णी है।

'कर्बला' नाटक में धार्मिक इतिहास को नैतिकता और मानवता के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। यह एक ऐतिहासिक घटना हजरत हुसैन की शहादत पर आधारित है, जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष और धर्म की सच्ची व्याख्या के प्रतीक हैं। इसमें प्रेमचंद ने सामाजिक चेतना को संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जिसमें नैतिकता, बलिदान और धार्मिक मूल्यों की रक्षा की भावना निहित है। इस नाटक के संवाद धर्म को सत्ता से अलग करने और नैतिक साहस की प्रेरणा देते हैं। प्रेमचंद ने इस नाटक में धर्म को केवल आस्था नहीं, बल्कि नैतिक प्रतिरोध के रूप में प्रस्तुत किया है। संवादों के माध्यम से उन्होंने धर्म के मानवीय पक्ष को उजागर किया है। इस नाटक में हुसैन सत्य और न्याय के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले नायक हैं। वे अपनी सामाजिक चेतना और सरोकार के ही कारण नैतिकता और धार्मिक मूल्यों की रक्षा करते हैं। इसीलिए वह आत्मबलिदान के लिए तैयार रहते हैं और सत्य के प्रति अंत तक अडिग बने रहते हैं। जबकि यज़ीद सत्ता का दुरुपयोग करके धर्म के नाम पर अत्याचार करता है। हुसैन के सहयोगी, जो इस संघर्ष में साथ देते हैं, वे सामाजिक भाईचारा, नैतिकता के समर्थक हैं। इस नाटक में धार्मिक आदर्श, नैतिकता, और बलिदान की भावना है। इसके आलावा इसमें हुसैन के चरित्र की नैतिक दृढ़ता को भी दर्शाया गया है। इस नाटक में प्रेमचंद ने मुस्लिम समाज की समस्याओं और कुरीतियों को उजागर किया है। इस नाटक में धर्म और राजनीति के बीच के संबंधों को भी दिखाया गया है। इस नाटक के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता की आलोचना की है।

'प्रेम की वेदी' नाटक में प्रेमचंद ने अंतरजातीय प्रेम, सामाजिक बंधन को चित्रित किया है। इसमें मूलतः जातिवाद के खिलाफ प्रेम की शक्ति और प्रेम के प्रति स्त्री की इच्छा और सामाजिक दबाव को बहुत सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इस नाटक में आधुनिकता बनाम परंपरा की भी बात की गई है। सच तो यह है कि इस नाटक से प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि का स्पष्ट बोध होता है। इसमें प्रेम को सामाजिक क्रांति के माध्यम के रूप में देखा गया है। इस नाटक के केंद्र में प्रेम और जाति के द्वंद्व को मुखरता से प्रस्तुत किया गया है। जहाँ प्रेम सामाजिक बंधनों से टकराता है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि इस नाटक में अंतरजातीय प्रेम को सामाजिक क्रांति के रूप में दर्शाया गया है। इसमें स्त्री की इच्छा और सामाजिक स्वतंत्रता का चित्रण बेबाकी से हुआ है। प्रेमचंद ने इसमें सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती दी है और प्रेम को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाकर प्रस्तुत किया है।

इस नाटक में जातिवाद, स्त्री की स्वतंत्रता, सामाजिक चेतना और सरोकार प्रमुखता से देखा जा सकता है। इस नाटक के संवादों में प्रेम और जाति के टकराव को गहराई से दर्शाया गया है। मिस जेनी का संवाद का संवाद इस सन्दर्भ में दर्शनीय है। वह प्रेम और जाति के संबंध में अपने विचार बात-चीत के ज़रिए प्रस्तुत करती है। वह कहती है-"प्रेम अगर जाति पूछे, तो वह प्रेम नहीं, सामाजिक समझौता है।"6 संवादों के माध्यम से प्रेमचंद ने इसमें स्त्री की इच्छा और स्वतंत्रता को स्वर दिया है। प्रेमचंद ने इस नाटक में जातिगत भेदभाव के विरुद्ध प्रेम को क्रांति का माध्यम बताने की कोशिश की है।

'प्रेम की वेदी' नाटक में मिस जेनी, ब्राह्मण युवक और समाज के प्रतिनिधि के बीच संघर्ष चलता है। मिस जेनी एक अंग्रेज ईसाई युवती है जो जातिवाद के विरुद्ध प्रेम को चुनती है। स्त्री स्वतंत्रता और अंतरजातीय प्रेम एक मुद्दा बन जाता है। प्रेमचंद ने पात्रों की आधुनिकता और आत्मनिर्णय को नाटक में दिखाया है। राजकुमार जो कि ब्राह्मण युवक है वह परंपरा और प्रेम के बीच संघर्ष करता है। जिसमे उसका जातिगत बंधन और आत्मसंघर्ष स्पष्ट रूप से दीखता है। इसलिए वह प्रेम के द्वंद्व और निर्णय के साहस के बीच फंसा रहता है। नाटक में समाज के प्रतिनिधि पात्र धार्मिक औए सामाजिक रूढ़ियों का समर्थन करते हैं, लेकिन अंततः बदलाव की ओर झुकते हैं। उनका संघर्ष सामाजिक दबाव का कारण बनता है, जससे परिवर्तन की संभावना को बल मिलता है। इस नाटक के संवादों में तर्क, आत्मचिंतन और सामाजिक विमर्श की झलक मिलती है। इस नाटक में प्रेमचंद ने प्रेम और समाज के दबावों के बीच संघर्ष को प्रस्तुत कियाहै। इसमें प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त स्त्री विमर्श और लिंग भेद की भी आलोचना की है। मिस जेनी अपने विचारों के बावजूद एक औरत के स्वभाव को भी पालती है लेकिन मर्यादाओं के भीतर। स्वगत के माध्यम से वह इसे महसूसती है। मिस जेनी सोचती है कि- "...एक क्षण के लिए भी उनकी सूरत आंखों से नहीं उतरी। ऐसे प्रेम पर अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाले प्राणी भी इस संसार में है। वह मैंने उन्हीं को देखा। मुझे स्वर्ग की विभूति मिल रही थी। ममा, मैंने समाज के खतरे से उसे ठुकरा दिया।"7 अगर दूसरे पक्ष पर विचार किया जाए तो जेनी धर्म-संप्रदाय, अभिलाषा और अनेक मत-मतांतर सभी का विरोध करती है।

हालाँकि, आज साहित्य ने एक नया कार्य अपने हाथ में ले लिया है, और उसका साधन है अंतर्निहित सौंदर्यबोध। वह इस सौंदर्यबोध को जगाकर अपने उद्देश्य की प्राप्ति का प्रयास करता है। जो कुछ भी कुरूप या घृणित है, जो कुछ भी अमानवीय है, वह ऐसे लेखक के लिए असहनीय हो जाता है। इस सन्दर्भ में प्रेमचंद ने लिखा है कि- "तो क्या हमें अपने आदर्शों का त्याग कर देना चाहिए? यदि ऐसा होता, तो मानवजाति का नाश हो जाता। जिस आदर्श को हमने सभ्यता के आरंभ से संजोया है; जिसके लिए मनुष्य ने न जाने कितने बलिदान दिए हैं; जिसने धर्म को जन्म दिया - मानव समाज का इतिहास इसी आदर्श की पूर्ति के संघर्ष का इतिहास है- हमें भी उस आदर्श को अपने सामने रखना होगा, उसे एक अपरिवर्तनीय वास्तविकता के रूप में स्वीकार करना होगा और फिर एक में दिखावटी अभिमान, आडंबर और संवेदनशीलता की कमी, और दूसरे में विनम्रता, विश्वास और प्रयास की प्रबलता को देखना होगा। और हमारी कला इन बातों पर तभी ध्यान देगी जब हमारी कलात्मक दृष्टि संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने दायरे में ले लेगी, जब संपूर्ण मानवता इसकी विषय-वस्तु बन जाएगी, तब वह किसी वर्ग विशेष की दासता से बंधी नहीं रहेगी। तब हम ऐसी सामाजिक व्यवस्था को बर्दाश्त नहीं करेंगे जिसमें एक व्यक्ति हजारों मनुष्यों पर अत्याचार कर सके।"8

प्रेमचंद ने अपने नाटकों में समाज के धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार किया है। वे समाज के सजग लेखक और प्रहरी भी थे। मुंशी प्रेमचंद अपने तीन प्रमुख नाटक- 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' में भारतीय समाज को गहराई से देखते हुए सामाजिक चेतना और सरोकारों को

This is an Open Access article that uses a funding model which does not charge readers or their institutions for access and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0) and the Budapest Open Access Initiative(http://www.budapestopenaccessinitiative.org/read), which permit unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, providedoriginal work is properly credited.

उजागर करते हैं। ये नाटक केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के दस्तावेज़ हैं। प्रेमचंद के तीनों नाटक समाज के विभिन्न मुद्दों जैसे- आर्थिक शोषण, धार्मिक नैतिकता और सामाजिक रूढ़ियों आदि को उजागर करते हैं। इसलिए उनके नाटक आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे हमें सोचने, सवाल उठाने और बदलाव की प्रेरणा देते हैं। प्रेमचंद के नाटकों के संवाद केवल शब्द नहीं हैं, बल्कि वे विचारों की चिंगारी हैं। वे दर्शकों को झकझोरते हैं, सोचने पर मजबूर करते हैं, इसके साथ ही समाज में बदलाव की प्रेरणा भी देते हैं। मुंशी प्रेमचंद के नाटक सामाजिक चेतना के संवाहक हैं। पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने भारतीय समाज की जटिलताओं, संघर्षों और सुधार की आकांक्षाओं को उजागर किया है। नाटक के पात्रों के संवाद और क्रियाएं प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि को सजीव बनाते हैं।

प्रेमचंद के नाटकों में सामाजिक चेतना और सरोकार एक महत्वपूर्ण विषय है। उनके नाटक 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की वेदी' में सामाजिक समस्याओं और चेतना को उजागर किया गया है। इसके साथ ही समाज में व्याप्त समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है। उनके नाटक आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रेमचंद के नाटकों का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों और समस्याओं को उजागर किया है। उनके नाटक समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन को दर्शाते हैं और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। प्रेमचंद के नाटकों में समाज के यथार्थ स्वरुप का चित्रण किया है, जिसमें सामाजिक समस्याओं और कुरीतियों को उजागर किया है। उनके नाटकों में समाज सुधार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अपने नाटकों के माध्यम से उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद के नाटकों में वर्गीय संघर्ष को भी दर्शाया गया है, जिसमें शोषक और शोषित वर्गों के बीच के संबंधों को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमचंद के नाटकों में सामाजिक चेतना और सरोकार को विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है। उन्होंने अपने नाटकों में जातिवाद और वर्गभेद की आलोचना की है और समाज में व्याप्त इन कुरीतियों को उजागर किया है। प्रेमचंद के नाटकों में स्त्री पात्रों की भूमिका और उनके अधिकारों की बात को मुखर रूप से चित्रित की है। इसके साथ ही समाज में व्याप्त स्त्री विमर्श और लिंग भेद की आलोचना को भी नाटकों में स्थान दिया है। यह बात भी उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद ने अपने नाटकों में धार्मिक कट्टरता की आलोचना पात्रों के माध्यम से की है। नाटकों के माध्यम से समाज में व्याप्त धार्मिक भेदभाव को भी उन्होंने उजागर किया है। 'साहित्य का उद्देश्य' अपने लेख में प्रेमचंद साहित्यिक रुचि में बदलाव को इंगित करते हुए कहते हैं- "अब साहित्य केवल मन बहलाव की चीज नहीं है, मनोरंजन के सिवा उसका और भी कुछ उद्देश्य है। अब वह केवल नायक-नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता, अपितु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है, उन्हें हल करता है। अब वह स्फूर्ति या प्रेरणा के लिए अद्भुत आश्चर्यजनक घटनाएं नहीं दृढता और न अनुप्रास का अन्वेषण करता है, किंतु उसे उन प्रश्नों से दिलचस्पी है जिनसे समाज या व्यक्ति गहरे प्रभावित होते हैं।"9 प्रेमचंद यहां इस बदलाव को बताकर साहित्य के प्रमुख उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। यहां वे साहित्य से जुड़े समाज व उससे पैदा होने वाले प्रभाव को अहम मानते है।

यह सच है कि 'संग्राम' नाटक में प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और समस्याओं को उजागर करते हुए सामाजिक परिवर्तन और जागृति की बात को संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जबकि 'कर्बला' नाटक में उन्होंने मुस्लिम समाज की समस्याओं और कुरीतियों को चिन्हित करते हुए उसे विशेष रूप से रेखांकित किया है। इस नाटक में उन्होंने धर्म और राजनीति के बीच के संबंधों को बहुत बारीकी से चित्रित किया है। वहीं 'प्रेम की वेदी' नाटक में प्रेमचंद ने बहुत नाटकीय ढंग से प्रेम और समाज के दबावों के बीच संघर्ष को चित्रित करने की कोशिश की है। इसी नाटक में उन्होंने स्त्री पात्रों की भूमिका और उनके अधिकारों पर भी बहुत खूबसूरती से संवादों की रचना की है। प्रेमचंद के नाटकों में सामाजिक चेतना और सरोकार एक महत्वपूर्ण विषय है। उनके नाटकों में सामाजिक समस्याओं और चेतना को उजागर किया गया है। समाज में व्याप्त कुरीतियों की आलोचना बहुत रचनात्मक ढंग से की गई है। प्रेमचंद के नाटक आज भी प्रासंगिक हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि उनके नाटक समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं।

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि 'संग्राम', 'कर्बला', और 'प्रेम की वेदी' के संवादों में सामाजिक चेतना और सरोकार इतनी गहराई से रचे-बसे हैं कि इनमें केवल कथानक ही आगे नहीं बढ़ते, बल्कि दर्शकों को सोचने और समाज को बदलने की प्रेरणा भी देते हैं। प्रेमचंद के संवाद केवल कथानक को नहीं, बल्कि विचारों को जन्म देते हैं। वे पाठकों को भावनात्मक रूप से झकझोरते हैं। इसके आलावा समाज के अन्याय, रूढ़ियों और सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ सोचने को मजबूर करते हैं। मुंशी प्रेमचंद के तीनों नाटक भारतीय समाज की जटिलताओं, संघर्षों और मूल्यों को उजागर करते हैं। इनकी कथावस्तु और संवादों में सामाजिक चेतना इतनी गहराई से रची-बसी है कि वे केवल नाटकीय प्रस्तुति ही नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक बदलाव के दस्तावेज़ बनकर उभरते जाते हैं।

सन्दर्भ

1. सुनीता त्यागी का लेख, गगनांचल, सितंबर-अक्तूबर 2014, पृ. 54
2. डॉ. रमा का लेख, गगनांचल, सितंबर-अक्तूबर 2014, पृ. 44
3. प्रेमचंद- संग्राम, हिंदी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता, 1923 पृ. 31
4. प्रेमचंद- कर्बला, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1924, पृ. 21
5. रामविलास शर्मा- प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2018, पृ. 28
6. प्रेमचंद- प्रेम की वेदी, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1933, पृ. 23
7. वही, पृ. 33
8. https://indianhistorycollective.com/munshi-premchand-natureandpurposeofliterature-progressivewritersassociation-faiz-manto-mulkrajanand/
9. प्रेमचंद- साहित्य का उद्देश्य, पृ. 14

This is an Open Access article that uses a funding model which does not charge readers or their institutions for access and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0) and the Budapest Open Access Initiative(http://www.budapestopenaccessinitiative.org/read), which permit unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, providedoriginal work is properly credited.

This is an Open Access article that uses a funding model which does not charge readers or their institutions for access and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0) and the Budapest Open Access Initiative(http://www.budapestopenaccessinitiative.org/read), which permit unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, providedoriginal work is properly credited.